RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 25 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 24 नवम्बर 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

स्मृतियों में 'सुरदा' स्व.सुरेन्द्र सिंह मर्तोलिया

कार्यालय प्रतिनिधि

हम सबके प्रिय 'सुरदा' (सुरेन्द्र सिंह मर्तोलिया) को हमसे बिछड़े समय हो चुका है लेकिन उनकी स्मृतियाँ रह-रह कर साथ हैं। बहुत कुछ करना था सुरदा ने अपने साथियों के साथ मिलकर लेकिन वह सारी यादों का पिटारा अब उनको याद करते हुए खोलना होगा। 23 नवम्बर 2023 को पिघलता हिमालय परिवार के वरिष्ठ सदस्य सुरेन्द्र सिंह मर्तोलिया के असमय निधन की दुःखभरी सूचना मिली थी, जो आज भी अविश्वसनीय लगती है। भारत पेट्रोलियम कारपोरेशन के शीर्ष अधिकारियों में शामिल सुरदा अपनी सादगी और गम्भीरता के लिये जाने जाते थे। 'दिगड़ी ग्रुप' के संस्थापक सदस्य के रूप में वह सामाजिक कार्यों में जुटे रहे। अपने पिता स्व. उम्मेद सिंह, चाचा स्व. दुर्गा सिंह मर्तोलिया, चाचा श्री मंगल सिंह की परम्परा को साधते हुए 'मर्तोलिया लॉज' की रीड़ के रूप मे जाने जाते थे। 2 जुलाई 1965 को जन्मे सुरेन्द्र संयुक्त परिवार के ज्येष्ठ बालक के रूप में बेमिसाल थे। सैनिक स्कूल घोड़ाखाल के मेधावी सुरदा ने लखनऊ विश्वविद्यालय से अपनी पढ़ाई पूरी की। बिना दिखावे के सहयोगी के रूप में दिलदार सुरदा के पदचिन्हों पर उनके अनुज डॉ. दिनेश मर्तोलिया सामाजिक कार्यों में जुड़े हैं।

सुरेन्द्र सिंह मर्तोलिया की हार्दिक इच्छा थी कि 2025 में सेवानिवृत्त होने के उपरान्त कई कार्यों को ओ बढ़ाया जाएगा लेकिन ईश्वर का रचा कोई नहीं जानता। वह अपने पीछे पत्नी पुष्पा

शेष पृष्ठ 2 पर

सपनों में डूबा प्रदेश बालमन के सवाल

विधायक हरीश धामी की गर्जना कि अधिकारी सुनवाई नहीं कर रहे हैं

विधायक बंशीधर भगत बार-बार चेता रहे और धरने की जिद करने लगे हैं

विधानसभा के सदन में खूब उलझे माननीय और हुई तीखी नोकझौंक

पि.हि. प्रतिनिधि

उत्तराखण्ड राज्य अपनी रजत जयन्ती के वर्ष में है और 2027 के विधानसभा चुनाव को लेकर माहौल अभी से मलमल होने जा रहा है। ऐसे में प्रदेश के बच्चे भी नये सपनों की झिलमिल देख रहे हैं। प्रदेश तो सपनों में डूबा ही है। बूढ़ों के अलावा बालमन के सवाल भी हैं कि आने वाला समय कैसा होगा? हाल यह हो चुके हैं हमारे जन प्रतिनिधि लगातार घिरे हुए हैं और घेरने में भी पीछे नहीं। विधानसभा के सदन में माननीय खूब उलझे और इनकी तीखी नोकझौंक के वीडियो भी वायरल हो रहे हैं। सत्र के दौरान सत्ता पक्ष सहित विपक्ष की ओर से जबर्दस्त बहस सुनने को मिली। पहाड़ की बात करने वाले विधायकों का मैदान में रहने का मोह सहित कई चरबरी लगाने वाली बातें हुई। नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्या और कालाढूंगी के विधायक बंशीधर के बीच हुए सम्वाद की बेहद चर्चा हो रही हैं। धारचूला-मुनस्यारी के विधायक हरीश

शेष पृष्ठ 2 पर

भारत के मीलपत्थर

हमारे विषाद को प्रसाद में बदलती है गीता

सूर्यकान्त बाली

भारत की सभ्यता के विकास में जिन व्यक्तियों, आन्दोलनों, पुस्तकों और स्थानों ने अपना-अपना भव्य योगदान दिया है, ऐसे प्रकाशस्तम्भों और मीलपत्थरों में गीता को कहाँ रखें? सबसे ऊपर? कहीं भी रखें, बात एक ही है और हर स्थिति में गीता भारतीय जनमानस के साथ अपने अविभाज्य रिश्ते की ओर भरपूर इशारा कर रही है।

गीता अर्थात जिसे गाया गया था। जाहिर है कि कृष्ण ने अर्जुन को यह पुस्तक गाकर नहीं सुनाई होगी। वैसा मौका ही कहाँ था? दोनों ओर सेनाएँ खड़ी हों, नगाड़े बज रहे हों, क्या ऐसे लोमहर्षक और उत्तेजक माहौल में कोई गा सकता है? नहीं गा सकता है तो फिर उसे गीता क्यों कह दिया गया? जवाब के लिए बहुत दूर नहीं जाना पड़ता। दुनिया में जितने भी युद्ध हुए, किसी में दार्शनिक परिसम्वाद का ऐसा उदाहरण नहीं मिलता। हाथ में धनुष उठाए एक मायूस योद्धा जीवन, जगत और मोक्ष सम्बन्धी सवाल पूछ रहा हो और रथ में जुते उतावले घोड़ों की लगाम थामे एक कुशल, स्थितप्रज्ञ सारथी उन प्रश्नों का उत्तर दे रहा हो- ऐसा विलक्षण दृश्य सिर्फ कल्पना में ही आ सकता है।

कलिंग युद्ध के बाद सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन हो गया था। इस पर नोट कीजिए, यह परिवर्तन युद्ध के बाद हुआ था। इसलिए इसे श्मशान वैराग्य का ही बृहत संस्करण माना जा सकता है। श्मशान में जाकर हम लोग जीवन की क्षणभंगुरता को लेकर अचानक दार्शनिक हो जाते हैं और खुद को मोह माया में फंसा कह कर कोसने लगते हैं। पर श्मशान की सीमा से बाहर आते ही क्या हमारा वैराग्य उड़न छू नहीं हो जाता और हम फिर से जीवन की महामारी में नहीं फँस जाते? इसीलिए उसे श्मशान वैराग्य कहा गया है क्योंकि वह श्मशान की परिधि के बाहर टिक ही नहीं पात। अशोक को एक विराट श्मशान दिखा, इसलिए उसका वैराग्य भी विराट हो गया। पर उस वैराग्य में से युद्ध के प्रति वितृष्णा तो पैदा हो गई, जीवन को लेकर किसी नए दर्शन का प्रतिपाद नहीं हुआ। इसलिए महत्वपूर्ण होते हुए भी क्यों न उस वैराग्य को श्मशान-वैराग्य का बृहद संस्करण माना जाए? पर अर्जुन को वैराग्य नहीं, विषाद हुआ था। जो विषाद आपको जीवन से नए ढंग से जोड़ दे उसे कृपया विषाद नहीं विषादयोग कहिए। जो कर्म आपको जीवन का रहस्य समझा दे वह कर्मयोग है। जो ज्ञान आपको पता है, वह सिर्फ ज्ञान है। पर जो ज्ञान आपके जीवन को बदल दे (और कौन नहीं जानता कि बहुत कम ज्ञानी ऐसे होते हैं जिनका जीवन भी अपने ज्ञान की वजह से बदला हुआ होता है) वह ज्ञानयोग है। इसलिए गीता कर्मयोग का, ज्ञानयोग का मतलब हमें समझाती है और इसीलिए अर्जुन के विषाद को गीता में विषादयोग कहा गया है। जब अर्जुन जैसे विद्वान योद्धा का विषाद 'योग' के स्तर को जा छूता है तब हम गीता से कम किसी ग्रन्थ की कल्पना भला कर कर सकते हैं? अकारण नहीं कि कोई रामायण नहीं, बल्कि कोई महाभारत ही गीता को जन्म दे सकी। रामायण में खासकर तुलसी की रामकथा में राम स्वयं ब्रह्म अनाभय अज भगवंता है। हनुमान को भक्ति ने ऐसा मस्त कर दिया है कि उनके पास जीवन के बारे में सोचने की फुर्सत ही नहीं। लक्ष्मण ज्ञानी हैं, पर उन्हें कभी विषाद ही नहीं हुआ और विभीषण विषण्ण है, पर उनके पास जीवन दर्शन कहाँ है? अगर कहीं महान विद्वान रावण और राम के बीच सम्वाद हो गया होता तो यकीन मानिए कि एक ऐसी ही अनुपम गीता बाल्मीकि रामायण में भी मिल जाती। पर वहाँ ऐसा अवसर ही नहीं आया और गीता को महाभारत की प्रतीक्षा करनी पड़ी।

और वहाँ हमें गीता कहाँ मिलती है? गीता के अठारह अध्याय हैं और वह अठारह पर्वों वाले महाभारत प्रबन्ध काव्य के बीचोंबीच लिखी पड़ी है। युद्ध के नगाड़े बज चुके हैं और मारकाट मचना ही चाहती है। बल्कि कुछ छोटे मोट सिपाहियों ने तो तलवारें चटका ही दी हैं। ठीक इसी वक्त दो विचित्र घटनाएँ घटती हैं जो प्रायः किसी युद्ध में नहीं घटती। चूँकि युद्ध भाई-भाईयों में, पिता पुत्रों में, मामा-भांजों में, चाचा-भतीजों में, दादा-पोतों में हो रहा है, इसीलिए ऐसी दो घटनाएँ सम्भव हो सकीं। पहली घटना अर्जुन का विषाद है। सामने सगे सम्बन्धियों को देख उनके पसीने छूट जाते हैं, मुँह सूखने लगता है और वह गांडीव छोड़ कर बैठ जाता है कि मुझे नहीं लड़ना वह युद्ध जहाँ द्रोण जैसे गुरु और भीष्म जैसे पितामह की लाशों पर चलकर हस्तिनापुर का सिंहासन मिल रहा हो। इनका परिणाम गीता के रूप में सामने आया। दूसरा काम युधिष्ठिर ने किया कि अपने रथ से उतर कर गुरुजनों और वृद्धजनों से आशीर्वाद लेने वे कुरुपक्ष की ओर पैदल ही चल पड़े। घटना वह भी महत्वपूर्ण है, पर वह हमारा आज का प्रसंग नहीं। अर्जुन जब धनुष छोड़ कर और हाथ पर हाथा धर कर बैठ ही गए तो कृष्ण ने पहले सामान्य तरीके से

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

बिहार में एनडीए की जीत के बाद उत्तराखण्ड में होने लगा मंथन

बिहार में एनडीए की ऐतिहासिक जीत से यह तो साफ हो गया है कि जो जमीन पर दिखता है, वह सच नहीं होता। सच वही होता है जो ईवीएम (किये गये मतदान) से निकलता है। भीड़ वोटर नहीं होती, सिर्फ भीड़ होती है। बिहार में जो रिकॉर्ड वोटिंग हुई थी, वह एनडीए के पक्ष में थी। ऐसी जीत की कल्पना शायद एनडीए ने भी नहीं की होगी। रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य और पलायन जैसे मुद्दे जिन्हें विपक्ष ने उठाया, उन्हें बिहार की जनता ने नकार दिया। एनडीए/राजग ने 203 सीटें जीतकर प्रचण्ड बहुमत पाया इसमें राजग के घटक भाजपा ने 89 सीटों पर जीत हासिल की।

बिहार की राजनीति देशभर में चर्चित रही है कि वहाँ किस प्रकार से जातिवादी प्रहार के साथ वोट पक्के किये जाते रहे हैं। जोड़तोड़ के माहिर बिहार के नेता किन बातों के साथ आम मतदाताओं को अपने पक्ष में करते रहे हैं, यह भी चर्चा होती रही है। इस बार के विधानसभा चुनाव में भी पक्ष विपक्ष बिहार की राजनीतिक धार पर चल रहे थे लेकिन जिस प्रकार का परिणाम निकल कर आया है उसने सभी को सोचने के लिये मजबूर किया है। उत्तराखण्ड में भी मंथन होने लगा है कि भविष्य की राजनीति कैसी होगी और जनता क्या चाहती है। बिहार के परिणामों के बाद उत्तराखण्ड में भाजपा ने जबर्दस्त जश्न मनाया और मान लिया है कि इसी तेवर के साथ इस प्रदेश में भी वह जीत दर्ज करेंगे। जीत के बाद भाजपा का आत्मविश्वास तो बढ़ना लाजमी है। दूसरी ओर विपक्ष को विचार करना पड़ा है कि वह किस प्रकार से एकजुटता कर 2027 के चुनाव के लिये रणनीति बनाए।

2027 में उत्तराखण्ड विधानसभा के चुनाव होने हैं और जनमुद्दों के साथ जिस प्रकार से यूकेडी सहित अन्य आन्दोलनकारी जिन तेवरों के साथ सड़कों पर हैं। ऊपर से कांग्रेस की बड़ी विपक्ष पार्टी होते हुए भी कलह से घिरी है। ऐसे में विपक्षी एकता होना बहुत टेढ़ी खीर लगता है। फिर भी बिहार चुनाव के परिणामों से यह कहना होगा कि भीड़ सिर्फ भीड़ होती है।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

बड़े हमले की साजिश थी

नई दिल्ली। लालकिला क्षेत्र में विस्फोट के आरोपी डॉक्टर मुजम्मिल और डॉक्टर उमर ने एक बड़ी आतंकी साजिश के तहत लालकिले की रेकी की थी और इस मॉड्यूल की साजिश गणतन्त्र दिवस के अवसर पर लालकिले को निशाना बनाने की थी। विस्फोट की छानबीन के दौरान सूत्रों ने यह जानकारी दी है।

दिल्ली में प्रदूषण गम्भीर

नई दिल्ली। दिल्ली में वायु प्रदूषण और हवा की गुणवत्ता लगातार गम्भीर श्रेणी में बनी हुई है। केन्द्रीय प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड के अनुसार वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 414 दर्ज किया गया है। इसके बाद सूचकांक 423 तक पहुंच गया। केन्द्र सरकार ने बिगड़ती वायु गुणवत्ता के मद्देनजर ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान के तीसरे चरण के तहत कड़े प्रदूषण रोधी उपाय लागू किए हैं।

बोत्सवाना से भारत आएंगे चीते

गबोरोन। भारत और बोत्सवाना ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु की राजकीय यात्रा के दौरान अफ्रीकी राष्ट्र से आठ चीतों को स्थानान्तरित करने की योजना की औपचारिक घोषणा की। राष्ट्रपति मुर्मू की मौजूदगी में स्थानान्तरण समझौता हुआ।

टैरिफ टेंशन के बीच कनाडा में जुटे

नियाग्रा। औद्योगिक लोकतन्त्रों के संगठन जी7 के शीर्ष राजनयिक कनाडा के दक्षिणी ओंटारियो में एकत्र हुए। जी7 नेताओं की बैठक ऐसे समय पर हुई है जब अमेरिका और कनाडज्ञ जैसे पारम्परिक सहयोगियों के बीच रक्षा खर्च, व्यापार और गाजा में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की युद्धविराम योजना तथा रूस-यूक्रेन युद्ध को समाप्त करने के प्रयासों पर अनिश्चितता के बादल मंडरा रहे हैं।

पाकिस्तान में मुनीर चीफ ऑफ डिफेंस

इस्लामाबाद। पाकिस्तान की नेशनल असेम्बली ने सैन्य कानून में संशोधन करते हुए सेना प्रमुख फील्ड मार्शल आसिम मुनीर को देश का पहला चीफ ऑफ द डिफेंस फोर्स नियुक्त किया है। राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी ने विवादास्पद 27वें संविधान संशोधन को मंजूरी दी, जिससे यह संविधान का हिस्सा बन गया।

बलूचिस्तान में बाधित की इंटरनेट सेवा

कराची। गृह विभाग द्वारा जारी सुरक्षा अलर्ट के बाद पाकिस्तान के अशान्त बलूचिस्तान प्रान्त में राजधानी क्वेटा को छोड़कर शेष स्थानों पर मोबाइल इंटरनेट सेवाएं निलम्बित कर दी गई हैं।

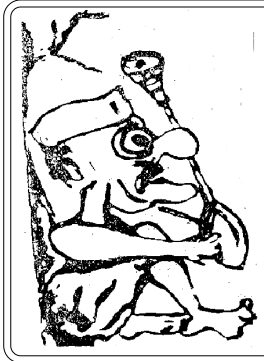

फसक

दाज्यू, खुल्लम-खुल्ला नंग्योई हो रही ठैरी

कलजुग में कुकुरयोव बहुत बड़ जाती है बल

दाज्यू, बिहार चुनाव में प्रचण्ड जीत के बाद अपना मगनू दिन-रात नाच रहा है। कह रहा है- 'अब पूरा पहाड़ रौंद दिया जाएगा। नीतीश कुमार को प्रचार के लिये बुलाऊंगा।' दाज्यू, जीत की खुशी में हमने भी मिठाई खा ली लेकिन सोच रहे हैं रौंदने के लिये नीतीश बाबू की जरूरत क्यों? रौंदने के लिये मगनू ही बहुत है। बांकी देख लिया जाएगा। शीत का मौसम है और गरम कपड़े निकल चुके हैं। सोचा था झुपझुपी तैयार होकर घूम लें लेकिन डर लगने लगा है। हल्द्वानी शहर में कबरेज को गये पत्रकार पर हमला हो गया। नाले से लगा अतिक्रमण करवाने वाले चौहान बिल्डर्स के दो भाईयों ने पत्रकार को नाले में गिरा दिया था। मामले का बड़ा हंगामा होने बाद से शासन-प्रशासन चेता और हमलावर पकड़े गये और अवैध निर्माण को प्रशासन ने ढहा दिया गया है। हमें तो यह समझ नहीं आ रहा है कि यहाँ निर्माण करने की छूट किसने दी थी, उन पर क्या होगा? दाज्यू, खुल्लम खुल्ला नंग्योई हो रही ठैरी। हम तो पहले से ही भीड़ जाने से पहले जूता पहन लेते हैं लेकिन शम्भू कह रहा है- 'सड़क में नंगे पैर चला करो, फतोड़ाफतोड़ के समय भागने में आसानी होती है।' दाज्यू, किसको क्या कहें? कलजुग में कुकुरयोब बहुत बड़ जाती है बल। लक्की ऑनलाइन खेल में व्यस्त है और मैडम रिमझिम सुरबहार की बात कर रही है।

दाज्यू, बेसिक शिक्षा निदेशालय में हुई हंगामेबाजी से सब दंग हैं। डीएलएड प्रशिक्षु भर्ती प्रक्रिया को लेकर दबाव बना रहे हैं क्योंकि उनका कोर्स अभी पूरा नहीं हुआ है। इनके समर्थन में शिक्षा निदेशालय पहुँचे लोगों का प्रदर्शन चल रहा था तभी शिक्षा निदेशक और महिला भिड़ गए। गजब ही हो रहा ठैरा आजकल। चिल्लर खाल-लालढांग मोटर मार्ग निर्माण की मांग को लेकर 12 सदस्यीय दल सीएम आवास घेरने के लिये पैदल ही देहरादून रवाना हो गया।

दाज्यू, उत्तराखण्ड कैबिनेट की बैठक में 12 प्रस्तावों पर मुहर लग चुकी है। इसमें देवभूमि परिवार योजना पर सहमति बनी है। इसके तहत राज्य में निवासरत परिवारों की पहचान, परिवार आईडी बनाने के साथ-साथ राज्य में लागू महत्वपूर्ण योजनाओं को लाभार्थी परिवार की आईडी से एकीकृत किया जाएगा बल। दाज्यू, सरकार के हाथ ठैरा जो चाहे कर ले। देहरादून में बिल्डरों और शराब कारोबारियों के प्रतिष्ठानों पर इनकम टैक्स का छापा मारा गया। दिल्ली से आई टीम ने दस्तावेज खंगाले।

दाज्यू, जिधर देखो भुत्योव हो रही है। टनकपुर में शक्तिमान यूनियन के चुनाव के बाद से छमछम सुनाई दे रही है। खरोड़ा-खरोड़ खनन काम होता है बल। यूनियन को लेकर भी दो धड़े बने हुए हैं। उधर भीमताल में आदि कैलास मन्दिर समिति में चुनाव के बाद नई कार्यकारिणी गठन को लेकर भी घमाघम हो रही है। कुछ चुनाव पर खुश हैं तो कुछ इसे नियम विरुद्ध बता रहे हैं।

गंगोलीहाट के एक गाँव में पूर्व प्रधान के साथ प्रधान पति ने दुष्कर्म का प्रयास किया बल। 35 वर्षीय महिला ने थाने पहुंचकर रिपोर्ट कराई तो पुलिस जाँच में जुटी है। भगवान भली करे।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

स्मृतियों में सुरदा.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

मर्तोलिया, पुत्र गौरव, पुत्री प्रगति सहित भरापूरा परिवार छोड़ गये, जो उन्हें याद करते हुए जीवन-जगत की भले कार्यों में जुटे हैं। सुरदा के संगतकर्ता हमेशा ओजस्वी थे तो जाहिर है कि वह उन कार्यों को आगे बढ़ाएंगे जो वह चाहते थे। 'दिगड़ी ग्रुप' के साथी अपने ठोस कामों के लिये जाना जाता है और इस ग्रुप ने समाज हित में जितना किया है उससे ज्यादा करने की ललक आज भी इसमें है। नरराज सिंह पांगती कहते हैं- 'सुरेन्द्र की यूं चला जाना गहरा घाव दे गया है लेकिन दिगड़ी ग्रुप हमेशा की तरह नये साथियों को जोड़ते हुए समाज को जोड़ने में सक्रिय रहेगा।' दिगड़ी नरेन्द्र सिंह जंगपांगी, पुष्कर सिंह पंचपाल, कैप्टन भूपेन्द्र पांगती, भूपेन्द्र पांगती सभी भाई सुरेन्द्र को याद करते हुए कहते हैं कि जो सपने बुने थे उन्हें गढ़ने में जुटे हैं। समय बहुत तेजी से बदल रहा है और पुराने उस दौर के साथ इस दौर की तुलना करें तो स्पष्ट हो जाता है कि नई पीढ़ी भी स्थितियों को समझ रही है। साथ ही अपनी जड़ों को टटोल रही है कि किस प्रकार 'सम' की मात्रा में ताल हो। 'पिघलता हिमालय' अपने नाम के अनुरूप मानता है कि शिव ही सत्य है और इस सत्य को महसूस करने वाले जीवन-जगत के हर विष को पीने से नहीं डरते। भाई सुरेन्द्र आप हमेशा स्मृतियों में रहेंगे।

सपनों में डूबा प्रदेश, बालमन.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

धामी की सड़क से लेकर सदन तक गर्जना की गूंज चारों ओर है। सीमान्त क्षेत्र के विधायक श्री धामी ने नाराजी जताते हुए कहा है जब अधिकारी जन प्रतिनिधियों की नहीं सुन रहे हैं तो आम जनता की क्या सुनेंगे। उन्होंने सरकार से सवाल किया कि उनकी विधानसभा में केवल आश्वासन मिले हैं और जनता त्रस्त है। कहा विधायक की न सुनने पर विशेषाधिकार हनन का मामला है। सड़क, संचार सहित तमाम दिक्कतें आम लोग झेल रहे हैं।

कालाढूंगी के विधायक बंशीधर भगत तो अपनी ही सरकार पर सवाल करते से दिखाई दे रहे हैं। हल्द्वानी कोतवाली के सामने धरने सहित कई बार वह अधिकारियों को चेताने के अलावा बार-बार धरने की जिद करने लगत हैं। विधायक के तीखे बोल आम जनत को सोचने पर मजबूर कर रहे हैं कि उत्तराखण्ड में क्या सपने ही दिखाई देंगे।

मंत्री सुबोध उनियाल की बयानबाजी से वह कम चर्चा में नहीं हैं। उनके बोल से कई उनके साथी भी असहज महसूस दिखाई देते हैं। निर्दलीय विधायक उमेश कुमार के तीखे सवालों ने पहाड़ी होने का दम भरने वाले विधायकों पर सवाल किये हैं और दावा किया कि पर्वतीय राज्य बनने से लेकर यहाँ के जनमुद्दों पर वह हमेशा अग्रणीय रहे हैं।

नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्या तो बहुत ही आक्रामक तरीके से सदन में दिखाई दिये, वैसे ही बाहर भी दिखाई दे रहे हैं। उन्होंने प्रदेश सरकार पर मनमानी का आरोप लगाया है। उपनेता प्रतिपक्ष भुवन कापड़ी के तीखे तेवर भी बेहद चर्चा में हैं। श्री कापड़ी लगातार सरकार पर हमला बोल रहे हैं।

इन सबके बीच मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी सधी हुई चाल में दिखाई दिये हैं और परिपक्व राजनेता की तरह कभी चुटकी लेते हैं तो कभी अपने सम्बोधन में खरी-खरी सुना देते हैं।

कुल जमा पक्ष-विपक्ष की तकरार तो समझी जा सकती है लेकिन भाजपा कांग्रेस दोनों पार्टी के भीतर पनप रहे लपलपाट को लेकर हर कोई कहने लगा है कि उत्तराखण्ड में कल क्या होने वाला किसी को पता नहीं। बीच-बीच में अफवाहों का दौर भी चल रहा है कि कौन नेता किधर टूटकर किस पाले में जा सकता है और किसे टिकट मिल सकता है या चुनाव के लिये कौन कैसा कर सकता है। राजनीति की इस पड़मपेच में आम जनता सपनों में ही डूब सकती है। उसके पास कहने-सुनने को कुछ नहीं है। जो उसे सुनाया जा रहा है और बताया जा रहा है, वही वह समझ कर मन बहला रही है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पुस्तक समीक्षा

'झंझावात' स्त्री के लोकसंसार की प्रतीक कथा

केशव भट्ट

जीवन की सबसे गहरी कहानियाँ अकसर वे होती हैं जो शब्दों में नहीं, रिश्तों की गंध में बसती हैं। 'झंझावात' ऐसी ही एक कथा है। एक स्त्री की, जो न केवल परिवार की धुरी थी, बल्कि उस लोकसंस्कार की प्रतीक भी। यह पुस्तक केवल स्मृति शेष मंजू जोशी का जीवन-वृत्त नहीं, बल्कि स्त्री अस्मिता, पारिवारिक एकता और सामाजिक चेतना का एक विस्तृत आख्यान है। मंजू जोशी के पति हरीश जोशी, पुत्री अचला जोशी और पुत्र अनुराग जोशी, तीनों लेखकों ने इसे जिस आत्मीयता से लिखा है, वह इसे एक साधारण श्रद्धांजलि न बनाकर, एक सम्वेदनशील दस्तावेज़ में बदल देती है। पुस्तक का शीर्षक 'झंझावात' जीवन के उसी सतत संघर्ष का प्रतीक है, जहाँ प्रेम, त्याग और जिम्मेदारियाँ एक-दूसरे में घुल-मिलकर अर्थ का नया संसार रचती हैं।

'झंझावात' की शुरुआत 'हमारी बात' से होती है, जहाँ लेखक परिवार, समय और स्मृतियों के बीच के सम्वाद को अत्यन्त आत्मीय ढंग से प्रस्तुत करते हैं। यहाँ भाषा में कोई बनावट नहीं, बल्कि भावों की सहजता है।

डॉ. निर्मल जोशी की भूमिका और डॉ. गोपाल कृष्ण जोशी की विद्वत् अभिमत पुस्तक को न केवल अकादमिक गरिमा देते हैं, बल्कि इसे एक साहित्यिक मूल्यांकन का स्वरूप भी प्रदान करते हैं। दोनों मानते हैं कि यह रचना किसी एक व्यक्ति के जीवन की कथा नहीं बल्कि स्त्री-चेतना की एक सांस्कृतिक यात्रा है। ऐसी यात्रा, जिसमें जीवन की साधारणता ही असाधारण बन जाती है।

पुस्तक के मध्य भाग में मंजू जोशी के जीवन की यात्रा अत्यन्त सजीव ढंग से दर्ज की गई है। एक पहाड़ी स्त्री के रूप में उनका जन्म, शिक्षा, शिक्षण-कार्य, सामाजिक भागीदारी, और पारिवारिक संघर्ष सब कुछ अत्यंत सादगी और प्रामाणिकता के साथ उभरता है। उनका जीवन 'देने की भावना' से परिपूर्ण रहा। वे शिक्षक थीं, पर शिक्षा केवल विद्यालय की दीवारों तक सीमित नहीं रही। उन्होंने अपने साथ जुड़ी महिलाओं को भी प्रेरित किया, आत्मनिर्भरता, मर्यादा और कर्म के आदर्श से।

एक स्थान पर यह पंक्ति आती है, 'गृहणी बिन घर, घर नहीं है अपितु गृहणी से ही घर का अस्तित्व है।' यह वाक्य पुस्तक की आत्मा बन जाता है, जहाँ स्त्री केवल गृहिणी नहीं, बल्कि घर

का स्वयं 'आत्मा' है।

'झंझावात' की भाषा में पहाड़ की मिट्टी की सोंधी महक है। शब्दों में लोक-गन्ध, भावों में धार्मिकता और वाक्य-शैली में आत्मीयता का विस्तार मिलता है। कहीं-कहीं सम्वाद इतने जीवन्त हैं कि पाठक को लगता है जैसे वह भी उस परिवार का एक सदस्य बन गया हो। लेखकों ने भावनात्मकता और दस्तावेज़ी सत्य के बीच सुन्दर सन्तुलन साधा है। जहाँ एक ओर मंजू जोशी का शिक्षिका जीवन बड़े गर्व से उभरता है, वहह्न दूसरी ओर पारिवारिक रिश्तों की गर्माहट, माँ-बच्चों के सम्वाद, और सामाजिक सम्बन्धों की सादगी पाठक के मन में स्थायी छाप छोड़ते हैं।

'झंझावात' के पृष्ठों में कोई दिखावा नहीं। यहाँ हर शब्द एक सम्वेदनात्मक शिलालेख की तरह है।

मंजू जोशी का जीवन उस पीढ़ी की प्रतिनिधि कथा है, जिसने कठिनाइयों के बावजूद परिवार और समाज को एक सूत्र में बाँधने का काम किया। उनका शिक्षण-जीवन, सामाजिक कार्य और पारिवारिक योगदान बताता है कि स्त्री केवल 'घर' तक सीमित नहीं बल्कि वह 'संस्कार की विश्वविद्यालय' है। उनके विद्यार्थियों और सहकर्मियों के संस्मरणों से स्पष्ट होता है कि मंजू जी जहाँ भी रही वहाँ एक नर्म रोशनी छोड़ गईं। वह रोशनी जो केवल दीपक से नहीं बल्कि आत्मा से निकलती है।

पुस्तक का सम्पादन तीनों संकलकों ने अत्यन्त सजगता से किया है। इसमें न तो अतिरेक है, न कृत्रिमता। कुछ स्थानों पर विवरणात्मक प्रवृत्ति पाठक की गति को धीमा करती है परन्तु वही विस्तार इस ग्रन्थ की आत्मीयता भी बढ़ा देता है। फोटोग्राफ, जीवनी और शैक्षणिक यात्रा के साथ स्मृतियों का संयोजन इसे एक पारिवारिक गाथा से आगे ले जाकर समाजशास्त्रीय सन्दर्भ दे देता है।

'झंझावात' का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है, परिवार को एक सांस्कृतिक संस्था के रूप में देखना. आज जब रिश्ते सुविधा के आधार पर बनते और टूटते हैं, यह पुस्तक याद दिलाती है कि 'परिवार' केवल सम्बन्धों का समूह नहीं बल्कि वह भावनात्मक धुरी है, जिसके चारों ओर समाज घूमता है। मंजू जोशी के जीवन के बहाने लेखकों ने यह भी दिखाया है कि स्त्री-पुरुष-बच्चों का सम्बन्ध केवल सामाजिक अनुबन्ध नहीं, बल्कि आध्यात्मिक सहयात्रा है। यही कारण है कि पाठक को यह पुस्तक एक जीवनी नहीं बल्कि एक आत्मकाव्य लगती है, जहाँ हर घटना कविता की तरह थरथराती है।

यह पुस्तक हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि साधारण जीवन जीने वाले लोग ही असाधारण उदाहरण बनते हैं। मंजू जोशी ने कभी बड़े मंचों से भाषण नहीं दिए लेकिन उनके कर्म स्वयं एक सन्देश बन गए कि सच्चा धर्म सेवा है और सच्ची पूजा कर्म। उनके जीवन से निकलने वाला यह सन्देश हर पाठक के भीतर गूंजता है।

'जीवन की झंझावतों में भी स्थिर रहो, क्योंकि वही स्थिरता तुम्हें प्रकाश में बदल देगी।'

अन्तिम अध्यायों में जब उनका असमय निधन आता है, तो पुस्तक का स्वर मौन हो जाता है। मौन, लेकिन भरा हुआ, जैसे कोई दीपक आखिरी लौ में और भी उज्जवल हो उठा हो।

मंजू जोशी की स्मृति केवल उनके परिवार की नहीं बल्कि उस सम्पूर्ण समाज की धरोहर है जिसने उन्हें जाना, सुना और महसूस किया।

'झंझावात' का हर पृष्ठ यही कहता है, जीवन के अर्थ उपदेशों से नहीं, कर्मों की निःशब्द चमक से बनते हैं और उस निःशब्दता में मंजू जोशी जैसी स्त्रियाँ अमर हो जाती हैं।

यह पुस्तक न केवल एक जीवन का दस्तावेज़ है, बल्कि संपूर्ण स्त्रीत्व का उत्सव भी है।

यह स्मृति, सम्वेदना और संस्कृति के त्रिकोण में खड़ी एक ऐसी रचना है जो पाठक को भीतर तक नम कर देती है। 'झंझावात' पढ़ना मानो किसी आत्मीय व्यक्ति के घर जाना है, जहाँ दीवारों पर अब भी उसकी हँसी की परछाईं झिलमिलाती हैं। ऐसी पुस्तकें समय के साथ बूढ़ी नहीं होती, वे पीढ़ियों के साथ और अधिक उजली होती जाती हैं।

पहाड़ों में खिल गया है पद्म

डॉ.मनीषा पाण्डेय

उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति में वृक्षों का बहुत अधिक महत्व है। पद्म जिसे हम पय्यां भी कहते हैं, हमारी लोक संस्कृति में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। पहाड़ों में जब दिसम्बर माह में पतझड़ का मौसम शुरु हो जाता है वहीं इस वृक्ष में फूल खिलने शुरू हो जाते हैं। इस मौसम में यह वृक्ष प्रकृति प्रेमियों को अपनी ओर आकृष्ट करता है। पद्म का पेड़ प्रकृति का अनोखा उपहार है। इस वृक्ष का धार्मिक दृष्टि से भी बहुत महत्व है। इसकी टहनियां धार्मिक कार्यों जैसे यज्ञोपवीत, जागर और बैसी आदि में प्रयोग की जाती है। पहाड़ी वाद्ययन्त्र ढोल दमाऊ आदि को बनाने में भी इसकी लकड़ी का प्रयोग होता है। दिसम्बर जनवरी में जब फूलों का अभाव हो जाता है तब कई लोग इसकी पत्तियों को पूजा में भी फूलों के स्थान पर चढ़ाते हैं।

पद्म वृक्ष का वानस्पतिक नाम प्रूनस सीरासोइडिस है। यह वृक्ष 30 मीटर तक लम्बा हो सकता है और 1200 से 2400 मीटर की ऊंचाई पर उगता है। इसे देववृक्ष माना जाता है। पय्यां का धार्मिक महत्व उत्तराखण्ड में शुभकार्य के समय गाए जाने वाले मांगलिक गीतों मं स्पष्ट होता है-

देवतों की डालि, तैं डालि पय्यां न्यूति,
सगुण्या डालि तैं डालि पय्यां न्यूति।

इस गीत में सर्वप्रथम देवताओं और पय्यां को न्योता दिया गया है।

मधुमक्खियों के लिए भी यह लाभकारी है, इसके फूलों का रस से वह शहद बनाती हैं। इस पेड़ की फूल, पत्तियां अनेक गुणों से भरी हैं। इसकी छाल से रंग और दवा भी बनाई जाती है।

पद्म का वृक्ष हमारी धार्मिक आस्था और संस्कृति से जुड़ा है। आज ग्लोबल वार्मिंग एवं अंधाधुंध वनों के कटने से इन वृक्षों की संख्या भी कम हो गई है। पर्यावरण में होने वाले परिवर्तन का प्रभाव इन वृक्षों पर भी पड़ा है। जहाँ यह दिसम्बर माह में खिलते थे अब अक्टूबर और नवम्बर में ही खिलने लगे हैं। अतः हमें आवश्यकता है कि हमारी आस्था से जुड़े और अनेक गुणों की खान, प्रकृति के अमूल्य उपहार इस पद्म के वृक्ष का संरक्षण करें। आज उत्तराखण्ड की अनेक पौधशालाओं में इसके पौधे उगाए जा रहे हैं, जो कि एक सराहनीय प्रयास कहा जाएगा।

ज्योतिष की बातें- 256

26 नवम्बर 2025 को शुक्र समग्रह की राशि वृश्चिक में प्रवेश करेगा। शुक्र विवाह, दाम्पत्य जीवन, कामेच्छा, काव्य, सौन्दर्य, नेत्र, वाहन, शारीरिक सुख, धन, वस्त्र, आभूषण, रत्न आदि अर्थात् समस्त भौतिक सुखों का कारक होता है। मन्त्रेश्कृत फलदीपिका के अनुसार शुक्र छठवें, सातवें और दशवें स्थान के अतिरिक्त अन्य सभी स्थानों पर शुभ होता है। अतः अगले 25 दिन शुक्र अपने कारक विषयों में मेष, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर व मीन राशि के जातकों को शुभफल प्रदान करेगा।

28 नवम्बर 2025 को, अभी तक वक्री चल रहा, शनि मीन राशि में मार्गी हो जाएगा अतः अब शनि अपने शुभाशुभ फल सामान्य रूप से सभी जातकों को प्रदान करेगा, अर्थात् प्रबल रूप से नहीं।

29 नवम्बर 2025 को अभी तक वक्री चल रहा बुध तुला राशि में मार्गी हो जाएगा। अतः अब बुध भी अपने शुभाशुभ फल सभी जातकों को स्वाभाविक रूप से प्रदान करेगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 146

जीवप्रेमी ही जीवहिंसक

आजकल जो श्वानप्रेमी होते हैं वे ही वास्तव में अपने को जीवप्रेमी कहते हैं। लेकिन श्वानप्रेम दिखाते दिखाते उसके प्रति कितनी क्रूरता करते हैं इस पर भी विचार करना चाहिए। कुत्ता पालने वाले लोग प्रायः विदेशी नस्ल का कुत्ता अपने घर पर लाते हैं। ऐसी स्थिति में उस कुत्ते को अपनी जाति बिरादरी का कोई भी कुत्ता दिखाई नहीं पड़ता है, अकेले ही जिन्दगी गुजारनी पड़ती है। अकेला होने के कारण अन्य नस्ल के कुत्तों से वह डरता है, भयभीत रहता है, फिर बिना मालिक के घर से बाहर नहीं निकल पाता। इस बात को इस तरह समझें किसी भारतीय आदमी को अकेला अफ्रीका में छोड़ दिया जाए। कुत्ते को जो भोजन मिलता है वह उसकी पसन्द का नहीं होता बल्कि मालिक की इच्छा का होता है। अपना स्वाभाविक भोजन न मिलने के कारण वह कुत्ता प्रायः बीमार ही रहता है, निरन्तर दवा चलती रहती है। बीमारी कष्ट बीमार ही जानता है। कुत्ता यदि स्वदेशी नस्ल का है तो भी घर के अन्दर बने रहने के कारण उसका अपने मित्रों, जाति बन्धुओं से मिलने का अवसर प्राप्त नहीं होता है। निरन्तर एकाकी रहने के कारण वह पालतू कुत्ता दूसरे लोगों के लिए हिंसक भी हो जाता है। सबसे बड़ी बात तो ये है कि उस कुत्ते को यथोचित शारीरिक संसर्ग भी प्राप्त नहीं हो पात है जो सबसे गम्भीर बात है। इस प्रकार कुत्ते को पालकर उसे मनपसन्द भोजन और शारीरिक संसर्ग से वंचित रखना उसके प्रति भयंकर क्रूरता है। इसी प्रकार विचार बिल्ली पालने पर अथवा अन्य किसी जीव को पालने पर करना चाहिए।

धर्मशास्त्रों के अनुसार किसी भी जीव के लिए भोजन पानी की व्यवस्था करना एक पुण्यकार्य होता है लेकिन उसको बन्धन में रखना पापकर्म होता है इस प्रकार आदमी अपने को कहता तो जीवप्रेमी है लेकिन वह वास्तव में पापकर्मा ही होता है।

-ओंकार नाथ कोष्टा

ज्योलीकोट में मनाया पदम महोत्सव

नैनीताल। वन अनुसंधान रेजंज ज्योलीकोट द्वारा चारखेत क्षेत्र में पदम महोत्सव का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य पारम्परिक वृक्ष पय्यां यानी पदम के संरक्षण और इसके सांस्कृतिक महत्व को बढ़ावा देना है। इसके लिये सामुहिक प्रयासों पर बल दिया गया। वन विभाग ने इस वृक्ष के संरक्षण को जापान और शिलांग की तर्ज पर चेरी फेस्टिवल की तरह 'पदम महोत्सव' मनाने की परम्परा शुरू की है। अनुसंधान शाखा की वन संरक्षक तेजस्विनी पाटिल के नेतृत्व में पूरे प्रदेश की अनुसंधान रेंजों में महोत्सव मनाया गया।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

लोहाघाट बाईपास के लिये भूमि इन्कार

लोहाघाट। राष्ट्रीय राजमार्ग पर लोहाघाट के पास देवराड़ी बैंड से मरोड़ाखान तक बनने वाले बाईपास निर्माण के लिए प्रशासन, एनएच और ग्रामीणों की बैठक में ग्रामीणों ने अपनी कृषि भूमि देने से इन्कार कर दिया। इस सम्बन्ध में लोगों ने पूर्व में सांसद अजय टम्टा को ज्ञापन भी दिया था।

सुरेन्द्र रावल को अशोक चिह्न

गंगोलीहाट। 40 वर्ष की सेवा और समर्पण को देखते हुए बीएसएफ अकादमी ने रावल गव निवासी सुरेन्द्र सिंह रावल को अशोक चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया है। वह पिछले दिनों सेवानिवृत्त हुए थे। श्री रावल के सम्मान पर क्षेत्रवासियों ने खुशी जताई है।

पीएनजी कालेज का स्वर्ण जयंती समारोह

रामनगर। पीएनजी राजकीय महाविद्यालय का स्वर्ण जयन्ती समारोह आयोजित किया गया। कालेज स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित इस समारोह में पूर्व निदेशक एवं उच्चशिक्षा सलाहकार प्रो.बीएस बिष्ट, पूर्व निदेशक उच्चशिक्षा बीसी मेलकानी, पूर्व प्राचार्य प्रो.हेमा प्रसाद, ब्लाक प्रमुख मंजू नेगी, महाविद्यालय के संस्थापक गलवलिये परिवर से विजय जिन्दल, विनय जिन्दल, प्राचार्य प्रो. एमसी पाण्डे, वायुसेना के रिटा.रियर एडमिरल ओपीएस राणा मौजूद थे।

नौलिंग महोत्सव पर चांचरी की धूम

बेरीनाग। गणाई गंगोली के नौलिंग महोत्सव में चांचरी की धूम रही। ब्लाक प्रमुख विनोद कुमार, ज्येष्ठ प्रमुख रविन्द्र डसीला, कनिष्ठ प्रमुख कविता डोबाल सहित तमाम लोग उपस्थित थे। ऐपण, गीतसंगीत, खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया था।

बाराबीसी महोत्सव में थिरके कलाकार

पिथौरागढ़। देवलथल में 5 दिवसीय बाराबीसी महोत्सव में कलाकार थिरके। मुख्य अतिथि भाजपा प्रदेश मंत्री दीपिका बोहरा, विशिष्ट अतिथि पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष विरेन्द्र बोहरा ने इसका उद्घाटन किया। स्कूली बच्चों के अलावा लोक कलाकारों ने मंच पर मनोरंजन किया।

खालगड़ा महोत्सव में भी धमाल

लोहाघाट। गुमदेश क्षेत्र के खालगड़ा में सीमा क्षेत्रीय दीप महोत्सव में भी धमाल मचा। उद्घाटन विधायक खुशाल सिंह अधिकारी ने किया। सांस्कृति कार्यक्रमों में आमंत्रित कलाकारों के अलावा स्थानीय कलाकारों ने प्रस्तुति दी। दीपक जोशी और संजय पाण्डेय के संचालन में हुए कार्यक्रम में समिति के अध्यक्ष एल.डी. भट्ट, मोहित पाण्डे, सतीश चिलकोटी, सरिता अधिकारी आदि उपस्थित थे।

ऐतिहासिक जौलजीवी मेला जारी

गरजे विधायक धामी, सीएम से की जाँच की मांग

भ्रष्टाचार में लिप्त नहीं बख्शे जाएंगे : पुष्कर

10 लाख में निपटा दी 80 लाख की योजना : हरीश

सत्र के दौरान आत्मदाह की चेतावनी

जौलजीवी। काली-गोरी नदियों के संगम पर लगने वाला ऐतिहासिक जौलजीवी मेला जारी है। मेले में भारत-नेपाल के रिश्तों की मधुरता के साथ ही स्थानीय व बाहर से आये व्यापारियों से रौनक है वहीं सजे मंच पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों में स्कूली विद्यार्थियों व कलाकारों की प्रस्तुतियां देखने को मिल रही हैं।

मेले का उद्घाटन मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी व अन्य अतिथियों ने किया और इस व्यापारिक मेले इतिहास का पन्ना और परम्परा बताया। जैसा कि देखने में आता है कि मेलों में राजनीतिक मंच सज जाते हैं और एकतरफा बातें होने लगती हैं लेकिन इस बार जौलजीवी मेले में क्षेत्रीय विधायक की गर्जना और सीएम द्वारा जाँच के निर्देश दिये जाने से आने वाले दिनों के लिये नया माहौल दिखाई दे रहा है। असल में मेले के शुभारम्भ मौके पर धारचूला-मुनस्यारी के विधायक हरीश धामी ने मुख्य मंच से ऐलान कर दिया कि यदि मुनस्यारी विकास खण्ड में भ्रष्टाचार की जाँच कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं होती है तो वह आगामी विधानसभा सत्र के दौरान आमरण अनशन और आत्मदाह करेंगे। विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद विधायक ने मुख्यमंत्री का आभार जताते हुए कहा कि उन्होंने उनकी विधानसभा के लिये करोड़ों रुपये की घोषणाएं की हैं लेकिन दुर्भाग्य है कि कार्य करने वालों ने 80-80 लाख के कार्यों को दस लाख में निपटा दिया। कहा कि जाँच कमेटी के एक जेई को भी अन्यत्र भेज दिया गया। उन्होंने सीएम से जेई को वापस मुनस्यारी तैनात करते के साथ ही जाँच करने की मांग की। इस पर मुख्यमंत्री पुष्कर धामी ने कहा कि भ्रष्टाचार के खिलाफ सरकार ने कार्रवाई की शुरुआत की है। पहले यह धारणा थी कि अगर कोई भी भ्रष्टाचार करता है तो छोटी-छोटी मछलियों को पकड़ा जाता है यानी की छोटे कर्मचारियों पर कार्रवाई होती थी लेकिन अब भ्रष्टाचार में लिप्त कोई भी हो उसके खिलाफ कार्रवाई होती है। उन्होंने हरिद्वार में आई एएस, पीसीएस, आईएफएस पर हुई कार्रवाई का उल्लेख करते हुए कहा कि भ्रष्टाचार में लिप्त नहीं बख्शे जाएंगे।

इस अवसर पर केन्द्रीय राज्यमंत्री अजय टम्टा, विधायक विशन सिंह चुफाल, मेयर कल्पना देवलाल, दर्जामंत्री हेमराज, जिलाधिकारी आशीष्ज कुमार भटगांई, एसपी रेखा यादव सहित तमाम लोग मौजूद थे।

गोदियाल के अध्यक्ष बनने के बाद नये तेवर लिये कांग्रेस मैदान में

उत्तराखण्ड कांग्रेस में प्रदेश अध्यक्ष सहित नई टीम बनने के बाद से पार्टी नये तेवर के साथ 2027 की चुनाव तैयारी में जुट चुकी है। करन माहरा को हटाकर पार्टी ने गणेश गोदियाल को कमान सौंपी, इसके बाद से पूरी पार्टी आगे के समीकरणों पर जुटी है। इसके लिये हरक सिंह रावत और प्रीतम सिंह को भी जिम्मेदारी देते हुए यह साफ कर दिया है कि कांग्रेस 2027 के चुनाव के लिये पूरी तरह तैयार है।

पार्टी संगठन ने काफी मंथन के बाद जिलों में भी अपनी तैयारी को अंजाम दिया है। जिलाध्यक्षों के रूप में अल्मोड़ा से भूपेन्द्र सिंह भोज, बागेश्वर से अर्जुन चन्द्र भट्ट, चमोली से सुरेश डिमरी, चम्पावत से चिराग सिंह फर्त्याल, देहरादून सिटी से डॉ. जसविन्दर सह गोगी, हल्द्वानी सिटी से गोविन्द सिंह बिष्ट, काशीपुर सिटी से अल्का पाल, रुद्रपुर सिटी से ममता रानी, देवप्रयाग से उत्तम असवाल और डीडीहाट से मनोज सिंह टोलिया को जिम्मेदारी दी है। इसी क्रम में हरिद्वार से बलेश्वर सिंह, हरिद्वार सिटी से अमन गर्ग, कोटद्वार से विकास नेगी, नैनीताल से राहुल छिमवाल, पच्छवदून से संजय किशोर, परवादून से मोहित उनियाल, पौड़ी से विनोद सिंह नेगी, पिथौरागढ़ से मुकेश पन्त, पुरोला से दिनेश चौहान, रानीखेत से दीपक किरौला, रुड़की से फुरकान अहमद, रुड़की सिटी से राजेन्द्र कुमार चौधरी, रुद्रप्रयाग से कुलदीप कंदारी, टिहरी से मुरारी लाल खंडवाल, उधम सिंह नगर से हिमांशु गाबा और उत्तरकाशी से प्रदीप सिंह रावत को शामिल किया गया है। कांग्रेस संगठन का मानना है कि नई टीम नई ऊर्जा का संचार करते हुए आगामी चुनावों में पार्टी की स्थिति को और मजबूत बनाएगी।

कर्णप्रयाग-रुद्रप्रयाग में जबर्दस्त प्रदर्शन

रुद्रप्रयाग। गैरसैंण राजधानी की मांग को लेकर कर्णप्रयाग और रुद्रप्रयाग में जबर्दस्त प्रदर्शन देखने को मिला। राज्य स्थापना की रजत जयन्ती पर जहाँ जश्न मनाया जा रहा था, दूसरी ओर इस प्रदर्शन ने जतना के गुस्से को प्रकट किया है। कर्णप्रयाग में स्थायी राजधानी गैरसैंण समिति के बैनर तले काला फीता बांधे लोगों का हुजूम सड़कों पर उतर आया। 'गैरसैंण उत्तराखण्ड की असली पहचान' नारे लगाते हुए प्रदर्शनकारियों ने सभा भी की। समिति के संयोजक पूर्व आईएएस विनोद रतूड़ी ने कहा कि राज्य सरकार स्थापना वर्ष की धूम मना रही है लेकिन राज्य आन्दोलनकारियों की शहादत को भुला दिया गया है।

रुद्रप्रयाग में भी जनजागरण रैली का आयोजन किया गया। मन्दाकिनी टैक्सी स्टैण्ड परिसर में हुई सभा में उक्रांद जिलाध्यक्ष सूरत सिंह झिंक्वाण ने कहा कि 25 वर्ष बाद भी हमें बुनियादी सुविधाओं के लिये संघर्ष करना पड़ रहा है। आने वाले दिनों में दल जनहित मुद्दों को लेकर घर-घर अभियान चलाएगा।

बाराही धाम में भव्य मन्दिर का निर्माण

चम्पावत। बाराही धाम देवीधुरा में माँ ब्रज बाराही के नए मन्दिर के निर्माण कार्य का शुभारम्भ होते ही इसकी चाल ने गति पकड़ ली है। मन्दिर का निर्माण कार्य देश के प्रसिद्ध मन्दिर वास्तुकार गुजरात के सोमपुरा परिवार द्वारा किया जा रहा है। यह मन्दिर उत्तर भारत का एक विशिष्ट एवं भव्य नागर व हिमालयी शैली का मन्दिर होगा, जिसकी भव्यता दूर से ही दिखाई देगी। गुजरात से आए सोमपुरी परिवार के प्रमुख विपुल बालकृष्ण त्रिवेदी अपने वास्तु शिल्पियों के साथ यहाँ निर्माण कार्य में जुटे हैं। उन्होंने मन्दिर के प्लान को अन्तिम रूप दे दिया है, जिसमें सभी आवश्यक धार्मिक व स्थापत्य तत्वों का विशेष ध्यान रखा गया है। मन्दिर में कुल तीन प्रमुख गुम्बद होंगे। मुख्य गुम्बद की ऊँचाई 65 से 70 फीट, दूसरा 50 फीट तथा तीसरा 40 फीट का होगा। मन्दिर की नींव में यहाँ सदियों से पड़े अण्डाकार ग्रेनाइट पत्थरों को तराश कर नींव में डाला जाएगा। कुछ पत्थरों को राजस्थान भेजा गया है ताकि उनकी नक्काशी की उपयुक्तता की जाँच हो सके। इतिहासकारों के अनुसार यह ग्रेनाइट उस मसय का है जब यह पूरा क्षेत्र जलमग्न हुआ करता था।

एआई सहित अन्य विषय शामिल होंगे

देहरादून। उच्चशिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) सहित कुछ अन्य विषय पाठ्यक्रम में शामिल किए जाएंगे। विभाग की ओर से इसके लिए रोडमैप तैयार किया गया है। कहा है कि वर्तमान समय को देखते हुए एआई जरूरत है। स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और वैज्ञानिक अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में भविष्य के लिए एआई कई लाभ प्रदान करता है। इसके अलावा भारतीय ज्ञान प्रणाली के तहत दर्शन, विज्ञान, गतिण कला, साहित्य और आयुर्वेद जैसे विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा।

नए रूप में दिखा गौचर मेला

गौचर। सात दिवसीय गौचर औद्योगिक विकास एवं सांस्कृतिक मेला इस बार नए रूप में दिखाई दिया। इसमें 287 अस्थाई दुकानों के साथ दूर-दराज से आये व्यापारी जुटे। मन्दिरनुमा इन स्टालों को पगोड़ा नाम दिया गया था। मेले के मुख्य द्वार पर इसबार गढ़केशरी स्व. अनुसूया प्रसाद बहुगुणा गौचर मेला समिति द्वारा लिखा गया। देश के प्रथम प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिन पर प्रतिवर्ष यह मेला होता है।

परिक्रमा

यूकेडी ने निकाली मूल निवास यात्रा

नई टिहरी। उत्तराखण्ड क्रान्तिदल ने जिले में इन्द्रमणि बडोनी मूल निवास जात्रा निकाली। स्व.बडोनी के गाँव से शुरू जात्रा टिहरी जिले के 5 विधानसभा क्षेत्रों से होते हुए निकली। जिसमें कहा गया कि राज्य अपनी दिशा ने न भटके।

एक सप्ताह पूर्व देनी होगी शादी की सूचना

भीमताल। नगर पालिका परिषद बोर्ड की बैठक में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास किया गया है कि अब पालिका क्षेत्र के अन्तर्गत किसी भी शादी या वैवाहिक कार्यक्रम चाहे वह विवाह घर, बैंक्वेट हॉल या निजी आवास में हो, की जानकारी एक सप्ताह पूर्व स्थानीय थाने और नगर पालिका को देनी अनिवार्य होगी। इस नियम को पारित करने का मुख्य उद्देश्य कार्यक्रमों के दौरान यातायात जाम की समस्या को रोकना और व्यवस्था बनाए रखना है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

स्व. महेन्द्र सिंह बरफाल की स्मृति में मेधावी छात्र सम्मान समारोह

दरांती ग्राम में होने वाले आयोजनों से जागृति

मुनस्यारी। दरांती ग्राम में स्व.महेन्द्र सिंह बरफाल की स्मृति में मेधावी छात्र सम्मान समारोह का आयोजन किया गया और विभिन्न कक्षाओं के मेधावी विद्यार्थियों को ट्रॉफी, नगद पुरस्कार और किताबें प्रदान की गई। स्व. बरफाल के परिजनों द्वारा द्वारा पिछले वर्ष से मेधावी बच्चों के सम्मान का यह कार्यक्रम शुरू किया गया है। स्व.महेन्द्र सिंह के सुपुत्र भूपाल सिंह, भगवान सिंह, प्रेम सिंह शुरू से ही सामाजिक कार्यों में बेहद सक्रिय रहे हैं। अपनी नौकरी-सेवा के दौरान भी यह लोग जिस जगह भी रहे वहाँ भी बेहतर समाज बनाने में अग्रणीय भूमिका निभाई है। अपने ग्राम दरांती में इनके द्वारा किये जा रहे कार्यों की सर्वत्र सराहना हुई है। बताते चलें कि दरांती ग्राम दरकोट-मदकोट मार्ग के बीच में है और अपनी कला संस्कृति के लिये यहाँ के लोगों का हमेशा से लगाव रहा है। कुमाउंनी लोक धुनों की रामलीला की शुरूआत भी यहीं हुई थी। ग्राम से जुड़े वरिष्ठजन किसी न किसी तरह के आयोजन करते रहते हैं जिससे काफी जागृति फैली है।

यहाँ हुए सम्मान समारोह में कक्षा एक के शिवम वर्मा, कक्षा 2 की माही आर्य, कक्षा 3 की विद्या मप्वाल, कक्षा 4 के मानव चन्द्र, कक्षा 5 के यश मप्वाल को इस बार सम्मानित किया गया। इस अवसर पर परिजनों में भूपाल बरफाल, भगवान बरफाल के साथ ही श्रीमती चम्पा देवी ग्राम प्रधान, श्रीमती ज्याति क्षेत्र पंचायत सदस्य, गणेश सिंह बरफाल, किशन सिंह बरफाल, चन्द्र राम, प्रहलाद मेहता आदि उपस्थित थे।

भूमि में मालिकाना हक के लिये इन्तजार करता बेरीनाग-चौकोड़ी

बेरीनाग। सुरम्य स्थल बेरीनाग और चौकोड़ी के लोग भूमि के मालिकाना हक के लिये इन्तजार कर रहे हैं। चाय बागानों की चलते वर्षों से भूमि का पचड़ा इन स्थानों पर रहा है। बेरीनाग को पहले नगर पंचायत फिर नगर पालिका बना दिया गया लेकिन इसके लिये आस-पास के गाँवों को जोड़कर इस प्रक्रिया से गुजरना पड़ा। लगातार जनसंख्या दबाव और भवनों का जाल बेरीनाग और चौकोड़ी में फैल चुका है लेकिन भूमि पर मालिकाना हक न होने का दर्द चुभता रहा है। अपनी इस मांग को लेकर कई बार सरकार से कहा गया है लेकिन कानूनी पेंच ऐसा कि मामला जस का तस है। इस समय नगर पालिका क्षेत्र में 1520 आवासीय भवन हैं। एक प्रकार से पूरा शहर टी स्टेट की जमीन पर बसा है, जिसमें किसी प्रकार का निर्माण कराना भी जोखिम ही है। भय बना रहता है कि न जाने किस प्रकार का फैसला आएगा। यही स्थिति चौकोड़ी की है।

हमारे विषाद को.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

अर्जुन को समझाने की कोशिश की । 'अरे, तुम्हारे अन्दर यह विषाद कैसा आ गया? यह तो आर्य चरित्र के विपरीत है। इससे तुम सीधा नरक में जाओगे। अकीर्ति होगी। इस कदर नपुंस जैसा व्यवहार नहीं करो। हृदय की दुर्बलता छोड़ो और उठ खड़े हो।'

पर अर्जुन पर इन चिकनी चुपड़ी धमकियों और डाँट का कोई असर नहीं पड़ा। वे तो बस यही रट लगाए रहे कि 'मैं भला भीष्म को कैसे मारूँगा' 'कैसे द्रोण से युद्ध कर पाऊँगा।' अर्जुन बोलते रहे और कृष्ण सुनते रहे। और अन्तत: जब अर्जुन ने समर्पण कर दिया कि 'मुझे कुछ नहीं सूझ रहा, मैं तुम्हारे पास एक शिष्य की भाँति शरणागत हूँ, मुझे बताओ कि मुझे करना क्या है- शिष्यस्तेहं शाधि मां त्वां प्रप्रत्रम्' तो कृष्ण का गुरुत्व जागा और खुद गीता के मुताबिक उन्होंने मुस्कुराते हुए अर्जुन को उपदेश दिया। इसी को हम गीता कहते हैं।

तो क्या कहा था कृष्ण ने। इस पर सोचने से पहले यह सोचें कि क्या इतना बड़ा उपदेश युद्ध के लिए उन्मत्त हो रही दो सेनाओं के मध्य दिया जा सकता है? इतने सवाल जवाब हो सकते हैं? अगर कृष्णार्जुन सम्वाद आसपास खड़े महारथी भी सुन रहे होंगे तो क्या वे क्रुद्ध नहीं हो रहे होंगे कि आखिर क्या सूझी है अर्जुन को कि ठीक बिगुल बजने के मौके पर, बल्कि कई बिगुल बज चुकने के बाद वह जनक की ब्रह्मसभा खोलकर बैठ गया है? नहीं सुन पा रहे होंगे तो क्या उकता नहीं गए होंगे कि आखिर माजरा है क्या, और रथी-सारथी आपस में भावुक और विचारपूर्ण तरीके से क्या बतियाए जा रहे हैं?

किसी घटना या वस्तु के खण्डन से ही हमें सन्तोष मिलता हो तो कोई सम्वाद फिर हो ही नहीं सकता। पर अगर समझने का इरादा हो तो निवेदन यह है कि निश्चित ही अर्जुन और कृष्ण के बीच इतना बड़ा सम्वाद रणभूमि में सम्भव नहीं हुआ होगा, कुछ संक्षिप्त बातचीत हुई होगी, अर्जुन को तसल्ली हो गई होगी और वह फिर से लड़ने को तत्पर हो गया होगा। यह भी तय है कि अर्जुन और कृष्ण के बीच यह सम्वाद श्लोकबद्ध नहीं हुआ होगा। यह सम्भव ही नहीं था। सभी जानते हैं कि महाभारत नामक प्रबन्ध काव्य एक टीम ने लिखा है और इसलिए हम तो यहाँ तक मानने को तैयार हैं कि व्यास ने प्रारम्भ में महाभारत में गीता को कोई स्थान ही शायन न दिया हो और उनकी टीम के सदस्यों ने आगे चलकर इस सम्वाद के काव्यात्मक महत्व को समझ कर उसे भीष्मपर्व में प्रतिष्ठित कर दिया हो। महाभारत एक प्रबन्ध काव्य है और गीता उसका एक अविभाज्य हिस्सा है। काव्य में हर कथनोपकथन और हर घटना को ठीक उसी शब्दावली में या उसी सिलसिले में रखना सम्भव ही नहीं होता (बल्कि काव्य सौन्दर्य बनाए रखने के लिए वैसे रखना ही नहीं चाहिए) जिस तरह वास्तविक जीवन में उसे कहा गया होता है या वह घटा होता है। द्वापर और कलियुग के सन्धिकाल के दो महान व्यक्तियों के आपसी सम्वाद को अगर जस का तस रख दिया गया होता तो हमारे लिए उसकी सिर्फ तकनीकी कीमत ही होती। इसलिए हमें यह कुतर्क कभी प्रभावित ही नहीं करता कि गीता का शब्दसंसार अर्जुन और कृष्ण के बीच हुई बातचीत को काव्यमय तरीके से पेश करता है तो उसकी बेकद्री कर दी जानी चाहिए।

बल्कि हमें शुक्रगुजार होना चाहिए उस महापण्डित का, पता नहीं वह कौन निर्मोही रहा होगा जिसे नाम कमाने की फिक्र ही नहीं थी, कि उसके एक महान सम्वाद को, हम दोहरा रहे हैं कि युद्ध क्षेत्र में घटे एक महान, बेशक-संक्षिप्त सम्वाद को गीता का रूप देकर महाभारत रूपी हार में हीरे की तरह पिरो दिया। इस विश्वस्थिभाव से पिरोया कि पाँच हजार साल होने हो आए, पर गीता का महत्व बढ़ता ही जा रहा है। वह हमारा राष्ट्रीय ग्रन्थ बन चुका है और महाभारत का हिस्सा होने पर भी यकीनन उसका अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व है। हमें तो उस महापण्डित को प्रणाम करना चाहिए जिसने गीता में न केवल कृष्णार्जुन सम्वाद को समाहित किया, बल्कि उस सम्वाद के सार्वजनिक और सार्वकालिक महत्व को समझ बूझ कर उसमें कई अन्य विचारपूर्ण बातें भी लिख दी। कृष्ण और अर्जुन के बीच एक संक्षिप्त सम्वाद ही हुआ और विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि गीता का आकार देते समय उस महापण्डित ने कृष्ण द्वारा अनय अवसरों पर कहे गए विचारों को उसमें शालीनता पूर्ण रख दिया। यहाँ तक भी हो सकता है कि गीता को सर्वस्वीकार्य बनाने के लिए उसने वहाँ उन सिद्धान्तों और विचार धाराओं को भी स्थान दे दिया हो तो तब प्रचलित हो और कृष्ण के सर्वस्वीकार्य व्यक्तित्व को देखते हुए उन्हें कृष्ण के मुख से कहलवाना बेहद स्वाभाविक लगता हो। यह गीता को देखने का एक नजरिया है। इसी नजरिए को हम एक अलग तरीके से भी समझ सकते हैं। अब अगले आलेख तक प्रतीक्षा करें। (साभार नवभारत टाइम्स)

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क
7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न.
8958525979,
9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
फोन सम्पर्क-
05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना के रजत जयन्ती वर्ष पर शुभकामनाएं

अमित रावत

(पुत्र स्व. बलभद्र सिंह रावत)
मेडिकल स्टोर, मेन बाजार
ग्वालदम (चमोली)

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804

YOGA MEDITATION	LIVE MUSIC	HOMELY FOOD	BIRTHDAY WEDDING

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे

धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
www.mountainheights.in मो. 9760007148

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना के रजत जयन्ती वर्ष पर शुभकामनाएं

S K M

एस.के.एम.

सीनियर
सेकेंड्री स्कूल
रामपुर रोड
हल्द्वानी

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)